राज कॉमिक्स

मूल्य 6.00 संख्या 253

तिलिस्म दैव

KADAM

तिलिस्मी देव

• लेखक: तरुणकुमार वाही • • चित्रांकन: कदन स्टुडिओ • • सम्पादन: मनीषचंद्र गुप्त •

किसी समय शातुल्य नगरी के राजा शातुल्य देव ने संतान प्राप्ति के लिए विष्णु भगवान की घोर तपस्या की —

विष्णु... ओऽम विष्णु...

भगवान विष्णु तपस्या से प्रसन्न होकर प्रकट हुए —

REVERVER OF ENJOYMENT
(Children's Library)
240 R
Ranchi

हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हैं राजन! मांगो. क्या वर मांगते हो?

भगवान... मां लक्ष्मी!

... मेरे दुखों का अंत कीजिए! मुझे संतान का दीजिए प्रभु!

राजन! आपकी स्त्री रानी देविका को दो संतानें होंगी!

क्या सच भगवन्?

हां राजन! और उनमें से एक संतान कन्या के रूप में जन्म लेगी!

किन्तु ध्यान रहे राजन! कन्या से विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध करने वाला व्यक्ति जीवित नहीं रहेगा!

इतना कहने के साथ ही भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी अंतर्धान हो गए--

धन्य हो प्रभु! धन्य हो मां!

आह! आज मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई! रानी सुनेगी तो मारे प्रसन्नता के नाच उठेगी!

महल में कदम रख दिया उन्होंने–

रानी... रानी देविका!!

अरे, महाराज!

महाराज लौट आए!

महारानी को सूचित करो!

महारानी जी... महारानी जी...

??

महाराज लौट आए हैं महारानीजी!!

क्या?

महारानी देविका! हमारी बरसों की तपस्या का फल हमें मिल गया महारानी देविका!

म... महाराज... आह!

सहसा महारानी देविका लड़खड़ा कर गिर पड़ी–

आह! महाराज!

महारानी? क... क्या हुआ तुम्हें?

अरे! महारानीजी को क्या हुआ?

कुछ ही देर बाद राजवैद्य ने महारानी देविका का निरीक्षण करने के पश्चात् घोषणा की—

बधाई हो महाराज! महारानीजी माँ बनने वाली हैं और आप... आप पिता बनने वाले हैं।

क्या सच?

माँ!

फिर भगवान विष्णु और लक्ष्मी के वरदान के फलस्वरूप रानी देविका ने कन्या एवं पुत्र को जन्म दिया—

अहा! आज हम बेहद प्रसन्न हैं रानी देविका! बेहद प्रसन्न हैं आज हम!

!!

कन्या का नाम महक और पुत्र का नाम हतबलि रख दिया गया—

अहा! राजकुमार और राजकुमारी घोड़ों पर बैठेंगे।

राजकुमार हतबलि की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल में द्रोणाचार्य की देख-रेख में चलने लगी—

शाबास हतबलि! बाण चलाओ।

उधर राजकुमारी भी दास-दासियों के बीच बड़ी होने लगी—

आज हम राजकुमारी को तैरना सिखाएंगी।

ज्यों-ज्यों राजकुमारी बड़ी होती गई उसकी सुंदरता में चांद लगते गए—

आह! इन्द्र की अप्सरा भी इस रूप में आपको देख ले राजकुमारी महक तो जलकर कोयला हो जाए।

चल हट! ठिठोली मत कर।

इधर राजकुमारी मल्लक का रूप-सौन्दर्य दूर-दूर के राजा,महाराजाओं और राजकुमारों में चर्चा का विषय बन रहा था—

उधर नागलोक में नागों का राजा नागदेव—

हा हा हा हा! क्या तुम सब मिलकर भी मुझे परास्त नहीं कर सकते! हा हा हा!

उफ्

आह

शीघ्र ही—

आह!

उफ्!

ओह!

हा हा हा! देखा वासुकी! पूरा नागलोक भी मिलकर मुझे परास्त नहीं कर सका! हा हा हा!

मनोरंजन के उन क्षणों के पश्चात —

हा हा हा !

सुन्दरता की भी लजा देने वाली सात-सात पत्नियों के साथ अठखेलियां करता नागदेव—

उफ ! कितना खुशकिस्मत हूं मैं...

...तीनों लोकों में तुम सातों जैसी अपूर्व सुन्दरता कहीं न मिलेगी।

और कामदेव को भी लजा देने वाला ऐसा सुन्दर, बलिष्ठ पुरुष भला और कहां होगा ?

??

और वार्तालाप का यह किस्सा सुनते हुए मुनि नारद के होंठों पर एक चंचल मुस्कान फैल गई—

नारायण ! नारायण ! लगता है नागों के राजा नागदेव को अपनी पत्नियों की सुन्दरता पर अति घमण्ड हो गया है !...

...क्यों न इस घमण्ड को चूर-चूर किया जाए।

दूसरे ही क्षण देवमुनि नारद नागलोक में राजा नागदेव के सामने खड़े थे –

नारायण... नारायण

अरे! देव-ऋषि नारदमुनि! प्रणाम ऋषिवर!

मेरे अहो भाग्य, जो आप नागलोक में पधारे देव-ऋषि! मुझे और मेरी अपूर्व सुन्दर पत्नियों को आशीर्वाद दीजिए देवमुनि!

नारायण...नारायण

वत्स नागदेव, क्या तुम्हें पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारी सातों स्त्रियों जैसी सुन्दरता नागलोक में कहीं नहीं है?

नागलोक क्या चीज है...

...ऐसी सुन्दरता तीनों लोकों में कहीं नहीं मिलेगी। स्वयं इंद्र के दरबार में भी नहीं।

नारायण..नारायण

किंतु नागदेव! तुम शायद शातुल्य नगरी के राजा शातुल्य के महल की ओर कभी नहीं गए।

आपकी इस बात का क्या अर्थ है मुनि नारद?

कल राजकुमारी महक का स्वयंवर है राजा नागदेव! स्वयं ही जाकर देख लो। नारायण...नारायण।

??

राजा शांतुन्य! स्वयंवर! हम अवश्य जायेंगे मुनिवर!

अगले दिन नागलोक की बम्बी से एक नाग बाहर निकला —

नाग, नागदेव में परिवर्तित हो गया —

मुझे मनुष्य के ही वेश में शांतुन्य महल जाना होगा।

अगर स्वयंवर की दुल्हन मेरी पत्नियों से भी सुन्दर हुई तो उसे केवल मेरी दुल्हन बनना होगा।

उधर महल में —

चलिए राजकुमारी महक! स्वयंवर में अनेक राजा-राजकुमार बड़ी ही बेसब्री से आपका इन्तजार कर रहे हैं।

स्वयंवर आरम्भ हुआ —

यह वरमाला लो पुत्री! और अपने लिए उचित वर का चुनाव करो।

जो आज्ञा पिताजी!

राजकुमारी महक के रूप-सौन्दर्य का जादू उपस्थित प्रत्येक विशिष्ट व्यक्ति पर पड़ा हुआ था —

उफ्फ! यह क्या नहीं ये परी किसके गले में वरमाला डालेगी?

अद्वितीय सुन्दरी।

मेरे जैसा बलिष्ठ और सुन्दर पुरुष तो यहां कोई दिखाई नहीं पड़ता।

राजकुमारी महक सभी राजाओं व कुमारों के निकट एक चक्कर लगाकर जैसे ही एक राजकुमार के निकट पहुंची —

ठहरो!!

????????

एक पल के लिए सबको जैसे सांप सूंघ गया। स्वयं नागदेव भी राजकुमारी महक के सुन्दर चेहरे पर अटककर रह गया --

उफ! गजब की सुन्दरता। हिरणी से नयन कमल। सीप से होठ।

तुम मेरी हो राजकुमारी महक! मेरी हो तुम। इस वरमाला पर केवल मेरा अधिकार है।

?

डाल दो मेरे गले में डाल दो, हे सौन्दर्य प्रतिमा।

!!!

दूसरे पल ही कई तलवारों से घिर गया वह --

ओह!

कौन हो तुम?

आपने अपने दामाद को अभी तक नहीं पहचाना महाराज!

आह! पिताश्री!

ओह! तेरी ये जुर्रत!

उड़ा दो इस गुस्ताख की गर्दन।

राजा शालुव्य का आदेश मिलते ही कई तलवारें नागदेव पर झपट पड़ीं– ठीक उसी पल—

हा हा हा हा

सांए

सांए

सांए

अरे! यह तो सांप है।

सांप

सांप

मायावी

नागदेव उछलकर राजकुमारी महक के गले में जा लिपटा —

आह! बचाइए हमें!

यह देख राजा शातुल्य चीख पड़े —

दुष्ट! अगर तूने राजकुमारी को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपना बनाने की चेष्टा की तो मां लक्ष्मी का आशीर्वाद तेरे लिए शाप बन जाएगा!

??

हा हा हा! मुझे शाप से भयभीत मत करो राजन! मैं राजकुमारी महक को देख लेने के बाद अब छोड़ नहीं सकता!

सब लोग मेरे रास्ते से दूर हट जाओ! अन्यथा अपनी तबाही के लिए आप स्वयं जिम्मेदार होंगे!

मायावी... दुष्ट! दूर हो जा हमसे। हम तुझसे नफरत करते है।

राजकुमारी महक, हम सौन्दर्य के पुजारी है। हम तुम्हारी नफरत को मोहब्बत मे बदल देगे।

खबरदार कोई आक्रमण न करे!

पिता श्री! हमे बचाइए!

एकाएक नागदेव के मुखसे भयंकर धूम्र-फुकार फूट निकली—

फूंssssss

चारों तरफ धुआं ही धुआं फैल गया—

उफ

ओह! यह धुआं

मेरी बच्ची!

राजकुमारी गायब

?

वह शैतान मेरी बच्ची को ले गया है महाराज! मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकती! आह!

महारानी!

आह...मुझे.... मेरी...बच्ची...

उधर गुरु शंकराचार्य के आश्रम से शिक्षा ग्रहण कर शतबलि वापस महल लौट रहा था –

आहा! अब मैं जल्दी ही महल पहुंच जाऊंगा! और अपनी बहन की डोली स्वयं अपने हाथों से विदा करूंगा!

किंतु नगर में प्रवेश करते ही –

बहुत बुरा हुआ!

न जाने वह दुष्ट नागदेव राजकुमारीजी के साथ कैसा व्यवहार करेगा!

??

ईश्वर महाराज व महारानीजी को ये दुख सहने की शक्ति दे!

हे, ईश्वर! य...यह मैं क्या सुन रहा हूं! अवश्य ही महल में कोई अनिष्ट हो गया है! नहीं...नहीं! मुझे शीघ्र वहां पहुंचना चाहिए!

और फिर —

माताश्री!

पुत्र!

??

य... यह सब कैसे हो गया पिताश्री! मुझे बताइए। मैं उस कमीने को जीवित नहीं छोड़ूंगा।

??

अपनी बहन को बचा लो पुत्र! कहीं देर न हो जाए।

गुप्तचरों की तलाश जारी है पुत्र! बस एक बार यह पता चल जाए कि वह दुष्ट था कौन? हम स्वयं उसे मृत्यु दण्ड देंगे।

नहीं!

आप अपनी सेना को आदेश दें पिताश्री! मेरा यह अभिमंत्रित बाण जिस स्थान पर गिरेगा, वहीं वह शैतान होगा।

एक विशाल सेना के साथ राजकुमार रतबलि ने खुले मैदान से बाण छोड़ दिया —

जय गुरुदेव

झनन्नन

बाण की झंकार से गगन गूंज उठा।

विशाल सेना बाण का पीछा करती हुई आगे बढ़ने लगी –

आगे बढ़ो! यह बाण जहां भी गिरे, उस स्थान को घेरकर तहस-नहस कर डालो!

उधर नागदेव राजकुमारी महक के साथ नागलोक पहुंच चुका था –

हा हा हा! देवऋषि, तुमने सत्य कहा था! किंतु अब राजकुमारी महक भी हमारी अर्धांगिनी होगी! हा हा हा!

??

इसी पल रोशनी के झमाके के साथ देवऋषि वहां प्रकट हुए –

नारायण नारायण

राजा नागदेव! यह तुमने क्या किया? तुम तो इसे अगवा ही कर लाए!

हां देवऋषि, ऐसा सौन्दर्य हमने आज तक नहीं देखा था! अब हम इसे भी अपनी पत्नी बनाएंगे!

सावधान राजन्! मां लक्ष्मी के वर के फलस्वरूप अगर तुमने इसके साथ किसी प्रकार की जबरदस्ती की तो अकारण ही मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे!

??

इसी के साथ देवऋषि नारद वहां से लुप्त हो गए –

ओह! राजा शातुल्य भी ऐसा कह रहे थे!

नारायण नारायण

महाराज! आप इस कन्या का विचार त्याग कर इसे सुरक्षित शातुल्य नगरी पहुंचा दें।

हां महाराज! इसी में हम सबकी व आपकी भलाई दिखती है।

महाराज! हम आपको खोना नहीं चाहतीं।

खामोश

इस सम्बन्ध में हम केवल वही करेंगे! जो हमारा मन कहता है।

और हमारा मन कहता है कि ये अपूर्व-सौन्दर्य प्रतिमा नागलोक की पटरानी बनेगी।

जाओ। तुम सब मिलकर इस विवाह की तैयारियां करो। राजकुमारी महक को हम से विवाह करना ही होगा।

आह!

राजकुमारी महक! तुम... तुम जाग गईं।

तू...? नीच, गद्दार!

राजकुमारी महक! तुम्हें हमारी पत्नी बनना होगा। अगर तुमने ऐसा न किया तो हम तुम्हारे राज्य को तबाह व बर्बाद कर देंगे।

नीच...दुष्ट...पापी! यह हर्गिज नहीं होगा। तेरे सिर पर काल मंडरा रहा है। विनाश काले विपरीत बुद्धि!

हा हा हा! तू नागदेव की शक्ति को नहीं जानती मूर्ख!

अचानक बुरी तरह से चौंक पड़ा नागदेव —

ओह! शातुल्य नगरी की सेना नाग लोक के द्वार के निकट है।

इसी पल तेज आवाज के साथ बाण नागलोक की बॉम्बी पर आ गिरा —

धड़ाम

गरज उठा शतबलि —

ओह, कायर! यहां छिपा बैठा है तू। बाहर निकल कमीने!

देख तेरी मौत तेरे द्वार पर खड़ी है।

??

सन्न

मेरी बहन! तू घबराना नहीं। तेरा भाई आ गया है, तेरी इस दुष्ट राक्षस से रक्षा करने।

अभी भी समय है नराधम! हम तुझे अभी भी प्राण दण्ड से बचा सकते हैं। हमें जाने दे।

हर्गिज नहीं।

सेनापति कुम्भदत!

एक भयंकर नाग प्रकट हुआ—

आज्ञा, महाराज!

नागलोक के द्वार पर खड़ी सेना को कुचल डालो।

!!

उसी समय नागलोक के द्वार पर –

लगता है वह कायर बाहर नहीं निकलेगा। किंतु यह बाण हमारे भीतर जाने के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।

लेकिन इससे पहले कि वह बाण छोड़ पाता –

हा हा हा

सेनापति कुफ्दूतको देखते ही सैनिकों में खलबली मच गई –

हा हा हा हा!

अरे! ये कैसा भयानक नाग है!

उफ!

??

हमारी तलवारें व भाले इसके आगे बौने साबित होंगे।

कुफ्दूतके साथ ही आसपास की बाँम्बियों से सैकड़ों नाग बाहर निकल आए –

हिस्स

हिस्स

और सैनिकों पर टूट पड़े –

हिस्स

सक

हाय!

आह

आह!

फूं

कुफ्रदूत की विषैली फुंकारों से सैनिक दम तोड़ने लगे –

फूं ऽऽ

हाय मरा!

आह

आई ई ऽऽऽ

यह देखते ही शतबलि ने क्रोध से थरथराते हुए बाण कुफ्रदूत पर छोड़ दिया, मगर –

सर ऽऽ

हा हा हा! तेरे ये बाण मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते मानव!

कुफ्रदूत ने अपनी शक्तिशाली पूंछ का वार शतबलि पर किया –

थड़

ओह

कुफ्रदूत ने शतबलि पर विषैली फुंकार छोड़ी –

फुं ऽऽऽ

नागलोक के भयानक सर्पों ने तबाही मचा दी –

फुस्स

आई

हाय मरा!

हिस्स

नागलोक के सर्प और सेनापति कुफदूत के आक्रमणसे शीघ्र ही शतबलि की सेना के पांव उखड़ गए—

भागो!

ये तो साक्षात मौत है

भागो। वरना सब मारे जाएंगे!

नहीं! रुक जाओ। इनका मुकाबला करो। रुक जाओ कायर मत बनो। ठहरो!

फ़ssssssssssssss

हा हा हा हा

हिस्स

हिस्स

हिस्स

हिस्स

हिस्स

फ़sss फ़sss

सेनापति कुफ्रदूत ने जहरीली फुंकार से शातब्लि को बेहोश कर दिया —

फूंSSS

आह!

और —

महाराज! ये रहा आपके दुश्मनों का मुखिया

हा हा हा! शाबास सेनापति!

भैया!

अगर अब भी जिद्द पर अड़ी रहोगी तो यह कल का सूर्य न देख पायेगा!

उधर राजा शातुल्य —

हे, विष्णु! हे, मां लक्ष्मी! तेरा ये पुत्र संकट में है भगवान! अपनी पुत्री की लाज रखना प्रभु!

उधर क्षीरसागर में —

स्वामी! राजकुमारी मल्लक का जन्म आपके ही आशीर्वाद से हुआ है। आपको राजा शातुल्य की पुकार की लाज रखनी होगी!

अगर वह उससे जबरदस्ती विवाह करता तो राजकुमारी मल्लक को दिये तुम्हारे आशीर्वाद के कारण वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता!

...किंतु नागदेव उसे डरा धमकाकर विवाह के लिए तैयार कर रहा है!

भगवान! आपको मल्लक की रक्षा के लिए शेषनाग को भेजना चाहिए!

किंतु मत भूलो प्रिये कि नागदेव को ब्रह्माजी से अमरता का वरदान मिला हुआ है!

लेकिन अगर कोई पाप करे तो उसे उसके किये का दण्ड तो मिलना ही चाहिए!

अवश्य मिलेगा!

हम कोई ऐसी तरकीब निकालते हैं कि नागदेव की मृत्यु भी न हो और महक की लाज भी बची रहे।

उसी समय नागलोक में...

बोलो राजकुमारी महक! क्या तुम्हें अपने भाई की जान प्यारी नहीं है?

नहीं। कृपया कर उन्हें कुछ मत कहना।

तब फिर तुम्हें प्रसन्नता-पूर्वक मेरी आठवीं रानी बनना होगा। बोलो, मंजूर है?

??

एकाएक राजकुमारी महक नफरत के साथ सोच उठी—

मैं तुमसे विवाह करूंगी नागदेव। किंतु तू कभी मेरा प्रेम न पा सकेगा।

महक ने विवाह की स्वीकृति दे दी।

उसी स्थानपर ही आनन-फानन में विवाह मंडप बना दिया गया। इसी पल शत्रजीत को होश आ गया—

नहीं बहन! तुम इस नीच से हर्गिज विवाह मत करो।

??

फिर इससे पूर्व कि विवाह के लिए मंत्रोच्चारण आरम्भ हो सकता—

फूंssss

एक तेज फुंकार ने विवाह मंडप की पवित्र अग्नि को बुझा दिया—

यह देख नागदेव क्रोध से दहाड़ उठा—

किस की मृत्यु का समय निकट आया है। लग्न-मंडप की पवित्र अग्नि किसने बुझाई है? सामने आए।

??

शेषनाग प्रकट हो गया—

फूँ SSSSS

शेषनाग!

हां, नागदेव! मुझे इस कन्या की लाज बचाने के लिए यहां आना पड़ा है।

??

!!

ओह! किंतु यह सम्भव नहीं है शेषनाग! यह कन्या मुझसे विवाह के लिए तैयार है।

नहीं! तुमने इसे विवश किया है।

मैं इस कन्या और इसके भाई को यहां से ले जाने आया हूं।

??

!!

नहीं!

कुफ्रदूत!

शेषनाग को रोको, कुफ्रदूत!

शेषनाग!

स्वामी की आज्ञा पाकर कुफ़्वूत शेषनाग से टकरा गया —

मैं जानता हूं कि भगवान के अवतार शेषनाग से टकराकर मैं मृत्यु को प्राप्त होऊंगा। किंतु स्वामी का आदेश मानने के लिए मजबूर हूं।

दोनों में रक्तिम जंग छिड़ गई —

हिस्स

हिस्स

शेषनाग ने कुफ़्वूत के प्राण छीन लिए।

कुफ़्वूत का शरीर पिघलने लगा। यह देख नागदेव का चेहरा एकाएक ही परिवर्तित होता चला गया —

शेषनाग! मेरे सेनापति को मार-कर, बचकर तुम भी नहीं जा सकते।

शेषनाग और नागदेव आपस में टकरा गए —

फ़ुं

फिस्स sss

खूनी जंग आरंभ हो गई —

फ़ sss

फिस्स

नामदेव के भयानक शक्ति प्रहारों से शीघ्र ही शेषनाग पराजित हो गया—

फुई ई

आह!

हा हा हा। इस विवाह को कोई शक्ति नहीं रोक सकती।

??

और ठीक उसी पल —

साक्षात भगवान विष्णु, मां लक्ष्मी के साथ।

प्रभु!

??

भगवान का स्पर्श पाते ही शेषनाग भी ठीक हो गया।

ओह! तो आप रोकने के लिए आए हैं मुझे। किंतु मैंने जो हश्र आपके शेषनाग का किया है, वैसा ही आपका भी करूंगा।

संभालिए मेरा प्रथम वार

स ऽ ऽ ऽ

किंतु विष्णु एवं लक्ष्मी तक पहुंचने से पूर्व ही गदा जलकर भस्म हो गई —

भक्क

??

बचाइए मेरा अगला वार!

भक्क

नागदेव! तू कितने भी शस्त्रास्त्र चला ले। सबका यही हश्र होगा। तुझे अपनी शक्ति पर बहुत अभिमान हो गया है न।

??

यह देख नागदेव प्रभु की शक्ति का महारूप... विराट रूप।

??

नागदेव! तूने एक स्त्री को विवश करके विवाह करने के लिए बाध्य किया है। तुझे इसका दण्ड मिलेगा।

??

नागदेव! तुम्हें नागलोक छोड़कर मृत्युलोक में अपना जीवन बिताना होगा।

मृत्युलोक पृथ्वी को कहते हैं।

मृत्युलोक?

नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!

अगर राजकुमारी महक तुम्हें क्षमा कर दे तो तुम नागलोक में रह सकते हो।

मैं इसे क्षमा नहीं करूंगी प्रभु! इसे दंड भुगतना होगा।

अगले दस क्षणों में तुम स्वयं को पृथ्वी पर पाओगे। और अगर तुमने नागलोक में प्रवेश करने की चेष्टा की तो तुम मनुष्यलोक से निकलकर कीड़े-मकोड़ों और जानवरों की चौरासी लाख योनियों में प्रवेश करोगे।

इसी के साथ शेषनाग पर विराजमान भगवान विष्णु व लक्ष्मी अन्तर्धान हो गए—

नहीं! नहीं प्रभु! मुझे इतना कठोर दण्ड मत दीजिए। मुझे क्षमा कर दें प्रभु!

दूसरे ही क्षण—

म... मैं कौन हूं। मैं यहां कैसे और कहां से आया हूं। म... मुझे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा।

तभी एक आकाशवाणी हुई—

आज से तुम्हारा नाम तिलिस्म देव है पुत्र! अपने दुष्कर्मों के कारण नागलोक से तुम्हें पृथ्वी पर आना पड़ा है। अब तुम्हें यहीं रहकर अपने पापों का प्रायश्चित करना होगा!...

??

...तुम अमर हो तिलिस्म देव! अगर तुम नागलोक में वापस लौटना चाहते हो तो जाओ, ईश्वर में ध्यान लगाओ और अपनी अपार शक्तियों को मानवता की भलाई के कार्यों में लगाओ।

ओह! मैं ऐसा ही करूंगा भगवन!

उधर राजकुमारी महक व राजकुमार शतबलि ने भी एकाएक स्वयं को राजमहल के भीतर सबके सम्मुख पाया—

मेरी बच्ची!

राजकुमार शतबलि! राजकुमारी महक! मेरे बच्चो!

जबकि नागदेव अब जो तिलिस्म देव बन चुका था, ईश्वर की कठिन आराधना में लीन हो गया तब एक दिन—

उठो वत्स! हम सब तुम्हारी ईश्वर भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हैं। वर मांगो पुत्र!

??

मुझे नागलोक वापस जाने का वर दें भगवान!

यह असम्भव है वत्स! भगवान विष्णु का शाप हम मिथ्या नहीं कर सकते। किंतु हम तुम्हें सहस्त्र शक्तियां प्रदान करते हैं, जिन्हें तुम मानवता की भलाई के लिए इस्तेमाल कर सकते हो!

और अगले ही पल —

ओह! यह क्या?

अलौकिक शक्तियां मुझमें प्रवेश कर गई हैं।

इसी के साथ सभी ईश्वर रूप अन्तर्धान हो गए —

और तिलिस्मदेव एक कमीन खत्म होने वाली तपस्या में लीन हो गया —